तिथि–10 अक्टूबर 2019
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२०
युगाब्द-५१२०, अंक-११९, वर्ष-१३
आश्विन, विक्रमी २०७६ (अक्टूबर 2019)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

सेमं नः काममापृण गोभिरश्वैः शतक्रतो। स्तवाम त्वा स्वाध्यः॥ –ऋ० १। १। ३१। ४

व्याख्यान–हे (शतक्रतो) अनन्तक्रियेश्वर! आप असंख्यात विज्ञानादि यज्ञों से प्राप्य हो, तथा अनन्तक्रियाबलयुक्त हो। सो आप (गोभिरश्वैः) गाय, उत्तम इन्द्रिय, श्रेष्ठ पशु, सर्वोत्तम (अश्वविद्या) विमानादियुक्त, तथा अश्व अर्थात् श्रेष्ठ घोड़ादि पशुओं और चक्रवर्ती राज्यैश्वर्य से (सेमं नः काममापृण) हमारे काम को परिपूर्ण करो। फिर हम भी (स्तवाम त्वा स्वाध्यः) सुबुद्धियुक्त होके उत्तम प्रकार से आपका स्तवन (स्तुति) करें। हमको दृढ़ निश्चय है कि आपके विना दूसरा कोई किसी का काम पूर्ण नहीं कर सकता। आपको छोड़के दूसरे का ध्यान वा यचना जो करते हैं, उनके सब काम नष्ट हो जाते हैं।।

सम्पादकीय

''राष्ट्रवाद और राजनीति''

वर्तमान के कुछ वर्षों में संसार भर की राजनीति में एक परिवर्तन हुआ है। अनेक देशों में वहाँ की राष्ट्रवादी पार्टियाँ सत्ता में आई हैं चाहे तुर्की हो, रूस हो, अमेरिका हो, ब्राजील हो या ईजराइल जैसा देश हो जहाँ हमेशा ही राष्ट्रवादी हावी रहे हैं। इसी प्रकार हमारे देश में भी एक राष्ट्रवादी सरकार का आगमन हुआ। इन सभी राष्ट्रवादियों का, इन सरकारों का एक और सामान्य लक्षण उभरकर सामने आया है और वह है अधिक से अधिक भौतिक विकास करने का, चाहे वह कितना ही विकसित राष्ट्र हो, वहाँ भी अधिक से अधिक भौतिक विकास की होड़ मची हुई है। इस प्रकार के राष्ट्रवादी विचार दुनियाभर में फैल रहे हैं। अर्थात् विश्व बन्धुत्व के स्थान पर 'प्रथम हम' का नारा दिया जा रहा है। वैसे देखा जाए तो इसमें कोई दोष भी नहीं है लेकिन जब यह अपने ही लोगों के लिए समस्या बन जाए तब मुश्किल होती है।

आइए अपने राष्ट्र पर एक दृष्टि डालते हैं, राष्ट्रवादी सरकार होना अच्छा है। तथाकथित धर्मनिरपेक्षता राष्ट्र को कमजोर करती है। लेकिन राष्ट्रवादी कहे जाने वाले यदि अपने राष्ट्र को ठीक से न जानते हों, राष्ट्र के आधार का पता न हो, राष्ट्र कहते किसे हैं यह जानकारी ठीक से न हो, राष्ट्र के प्रति लोगों की भावनाओं का दोहन करके देश की सत्ता को प्राप्त कर लिया हो, विकल्पहीनता की स्थिति का लाभ उठा लिया हो, राष्ट्र के युवाओं का दुरूप्रयोग करके उन्हें अन्धविश्वास में ढकेल कर, राष्ट्र के युवाओं को चुनाव में शराब पिलाकर चुनाव जीतकर, राष्ट्र के प्रतीकों का अपमान करने वाले, अपने ही महापुरुषों का अपमान करने वाले जब अपने दल मे सम्मिलित हो जाएं तो शुद्ध हो जाने वाले (बिना सार्वजनिक रूप से अपने किए पर पश्चाताप किए) इनके प्रिय हो जाएं। केवल तुष्टीकरण के लिए संस्कृति का दुरूपयोग किया जाए। राष्ट्र को तोड़ देने वाली विचारधारा से समन्वय स्थापित करने लग जाएँ। सभी भाषाओं की जननी संस्कृत से भी किसी अन्य भाषा को प्राचीन सिद्ध करने लग जाएं। अर्थात् राष्ट्रवाद केवल सत्ता प्राप्त करने का माध्यम बन जाए चाहे राष्ट्र के जन कितने ही दुख उठाते रहें, शोषण सहते रहें, अंधविश्वास, व्यसनों में पड़े रहें, इससे कोई लेना-देना न रहे तो ऐसा राष्ट्रवाद अधिक समय तक नहीं टिकता है। जो वर्तमान में राष्ट्रवाद चल रहा है यह सिद्धान्तों के न होने कारण घाल-मेल वाला राष्ट्रवाद कहलाता है इसे ही छद्म राष्ट्रवाद कहते हैं।

वैसे परिवर्तनशीलता के सिद्धान्त के आधार पर और राजनीति में प्रजातन्त्र के होने के कारण तो यह और भी तेजी से आता है। प्रजातन्त्र में जब लोग विकल्प के लिए तैयार हो जाते हैं तो फिर वे यह नहीं देखते कि जो विकल्प हमारे पास है वह वर्तमान से भी ज्यादा खराब है, फिर भी वह परिवर्तन कर ही डालते हैं। आज तक यही होता रहा है। भविष्य में यदि सही विकल्प लोगों के सामने नहीं होगा तो

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

लोग पुनः उसी धर्म निरपेक्षता पर आधारित विकल्पों को चुनेंगे, वैसे वर्तमान के इन घाल-मेल वाले राष्ट्रवादियों ने भी अपने आपको उसी मार्ग पर चलाना आरम्भ कर दिया है कम या अधिक मात्रा में।

वर्त्तमान में आर्यों व उन सभी राष्ट्रवादियों के सामने, जो राष्ट्र को ठीक से समझते है व लोगों की योग्यता और सिद्धान्तों के आधार पर राष्ट्र निर्माण चाहते हैं, न कि केवल भावनाओं के आधार पर, के सामने चुनौती है ऐसा विकल्प खड़ा करने की। जिससे कल लोग मांग करें तो उन्हें पुनः उन्हीं तथाकथित धर्मनिरपेक्षों के सामने न हाथ फैलाना पड़े और पुनः राष्ट्र गढ्ढे में न जाए अपितु जहाँ तक पहुँचा है वहाँ से आगे चले। राष्ट्र का जन-जन सक्षम बने। क्योंकि इस छद्म राष्ट्रवाद का नशा एक दिन लोगों के मस्तिष्क से उतरेगा जरूर और राष्ट्र पहले से भी भंयकर स्थिति में होगा। यदि विशुद्ध वैदिक राष्ट्रवाद की अवधारणा को लोगों के सामने नहीं रखा गया तो राष्ट्र बहुत विकट स्थिति में होगा।

और विकल्प एक दिन में तैयार नहीं होता, आग लगने पर कुआँ नहीं खोदा जाता है। इसके लिए पहले से ही संघर्ष करना पड़ता है, रास्ता बनाना पड़ता है, अनेक लोगों को खपना पड़ता है, बलिदान देना पड़ता है। ऋषि दयानन्द ने जिस आर्यावर्त की आकांशा की थी उसको पूरा करने का संकल्प हम सभी लें, ऋषि के बलिदान से प्रेरित हो हम भी अपना सहयोग करें और राष्ट्र के लिए उस विकल्प को तैयार करने में अपना तन-मन-धन लगाएं, अभी से लगाएं, आज ही से लगाएं, यही हम सब का कर्त्तव्य है।

आर्या गुरुकुल का उद्घाटन समारोह सम्पन्न

दिनांक 6 अक्टूबर 2019 को मॉडल टाऊन करनाल में आर्या गुरुकुल का उद्घाटन समारोह विधिवत् रूप से सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम गुरुकुल टटेसर के ब्रह्मचारियों व गुरुकुल नजीबाबाद की ब्रह्मचारिणियों द्वारा शालाकर्म विधि पूर्ण विधि-विधान से की गई। यज्ञ में आचार्या इन्द्रा जी, सुशीला जी, सुमन जी व आचार्या चन्द्र कान्ता जी ने मुख्य यजमानो की भूमिका निभाई। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य हनुमत् प्रसाद जी, प्राचार्य संगोपांग वेद विद्यापीठ गुरुकुल टटेसर जौन्ती, दिल्ली रहे। वैदिक विधि से प्रवेश की प्रक्रिया पूर्ण करने के उपरान्त गीतों व व्याख्यनों का कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। इसमें सर्वप्रथम आर्या सुमित्रा जी के गीत से प्रारम्भ किया गया। तदुपरांत आचार्य डॉ. सुशीला जी का व्याख्यान हुआ, डॉ. सुशीला जी ने अपने व्याख्यान् में गुरुकुल के कार्यकलापों व प्रवेश प्रक्रिया आदि के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि इस गुरुकुल का उद्देश्य वेद की प्रचारिका, उपदेशिका व पुरोहिता बनाने का है जो आने वाले समय में राष्ट्र का चित्र व चरित्र बदलने की क्षमता रखती हैं। आचार्य जितेन्द्र जी ने गुरुकुल के लिए अन्न व धन संग्रह करने वाली महिला सदस्यों का धन्यवाद किया जिसमें अनेक महिलाएं सम्मिलित थीं। गुरुकुल में प्रथम तल पर छात्रावास बनाने के लिए आर्याओं द्वारा दान की घोषणा की गई। आचार्य हनुमत् प्रसाद जी ने अपने व्याख्यान् में आर्याओं को समाजिक क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। अन्तिम व्याख्यान मुख्य आचार्य परमदेव मीमांसक जी का रहा जिसमें आचार्य जी ने महिलाओं के लिए इस प्रकार का संस्थान बनाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए महिलाओं को आर्या निर्माण व स्वयं की उन्नति के लिए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि देश की आधी आबादी होने के कारण महिलाओं की भूमिका राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण है। वेद का आचरण करने वाली विदुषियाँ यदि सम्पूर्ण नारी समाज को वेदनुयायी बना लेती हैं तो सम्पूर्ण राष्ट्र को आर्य बनाने का सपना साकार किया जा सकता है।

आवश्यकता है केवल निरन्तर प्रयास करने की। इसी के लिए आर्या गुरुकुल की स्थापना की गई। और यह गुरुकुल देश में महिलाओं के उत्थान के लिए एक विशिष्ट संस्थान सिद्ध होगा। कार्यक्रम में विभिन्न प्रदेशों से बहु संख्या में पधारें आर्य प्रतिनिधियों, आर्यो-आर्याओं ने भाग लिया जिनमें अधिकांश महिलाएं सम्मिलित थी। -सरोज आर्या, दिल्ली

राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा द्वारा मनाया गया विजय पर्व

शस्त्र और शास्त्र दोनों का सम्मान व समन्वय किसी भी राष्ट्र व समाज के उत्थान के लिए आवश्यक है। आर्य गुणों से युक्त क्षत्रिय ही शास्त्र के महत्त्व को भी समझते है और अस्त्र-शस्त्र का उपयोग ठीक ढंग से कर पाने में सक्षम होते है। इस उद्देश्य की पूर्ति में राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा आर्य युवाओं को क्षत्रियत्व की ओर प्रेरित कर उन्हें आर्य क्षत्रिय बनाती है और इस राष्ट्र में शास्त्र के विधान के अनुरूप कार्य हो ऐसी व्यवस्थाओं को स्थापित करने का कार्य करती है। इसी संकल्प को और दृढ़ करने के लिए **राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा** 'विजयादशमी' के दिन प्रतिवर्ष विजय पर्व के रूप में अपना वार्षिक कार्यक्रम सम्पन्न करती है।

राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष की 8 अक्टूबर को विजय पर्व मनाया गया। इस वर्ष का कार्यक्रम रोहतक में मनाया गया। प्रात:काल देवयज्ञ से कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। हजारों आर्य क्षत्रियों ने अपने गणवेश में इसमें भाग लिया। यज्ञ के उपरान्त क्षत्रियों द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। उसके उपरान्त सभी क्षत्रियों ने रोहतक शहर में लगभग पांच किलोमीटर पद संचलन किया। रास्ते भर में जयघोष लगाते हुए क्षत्रिय चल रहे थे और लोग अपने, घरों, दुकानों से निकल-निकल कर उनका स्वागत कर रहे थे। नगर के लोग क्षत्रियों के इस प्रदर्शन से बड़े उत्साहित व उल्लसित थे।

पथ संचलन के पूरा होने पर क्षत्रिय वापिस समारोह स्थल पहुंचे और शस्त्र पूजन व क्षत्रियों के द्वारा शारीरिक प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम में हरियाणा सरकार के मंत्री श्री मनीष ग्रोवर जी व सर्वहित पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष श्री योगेश भारद्वाज जी भी उपस्थित रहे। निकट व दूर के अनेकों आर्यगण भी कार्यक्रम में पहुंचे आर्य क्षत्रियों को संदेश देने का कार्य आर्य महासंघ के अध्यक्ष आचार्य हनुमत् प्रसाद जी ने किया व क्षत्रियों का आह्वान किया कि विजय पर्व मनाने की सार्थकता तभी है जब देश में सदाचार बढ़े। आर्यों का वर्चस्व स्थापित हुए बिना राष्ट्र में युवा श्रेष्ठता की ओर नहीं बढ़ पायेंगे। राष्ट्र के युवाओं को यदि अंधविश्वास, दुराचार आदि से मुक्त कराकर यदि राष्ट्र निर्माण में नहीं लगाया गया तो राष्ट्र की उन्नति सम्भव नहीं है। और यह कार्य केवल तभी हो सकता है जब आर्यों की विचारधार प्रबल हो। यही विचारधारा राष्ट्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकती है। कार्यक्रम में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य जितेन्द्र जी, अन्य आचार्यगण, राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के पदाधिकारी गण व अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

-डॉ. धनुषमान आर्य, महासचिव, राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा,

भारत के लोग आर्यों की संतान: आचार्य

सिटी रिपोर्टर | चंडीगढ़

आर्य समाज सेक्टर-16 चंडीगढ़ में आर्य संगठन संकल्प सभा का आयोजन किया गया। संगठन संकल्प सभा के मुख्य वक्ता आर्य महासंघ के अध्यक्ष आचार्य हनुमत प्रसाद उपाध्याय ने आह्वान किया कि हम भारत के लोग आर्यों की संतान है और हम आर्यों की संतानों को एकता के सूत्र में बंध जाना होगा। यह एकता का सूत्र ही था, जिसके आधार पर संपूर्ण विश्व का वर्षों तक मार्गदर्शन किया और यह सूत्र एक ईश्वर, एक धर्म, एक धर्म ग्रंथ, एक भाषा के रूप में हमें अपनाना होगा।

ऋषि दयानंद ने आर्यों की एकता के लिए सत्यार्थप्रकाश जैसा महान ग्रंथ हमें दिया है। इसे पढ़कर हम अपनी बुराइयों का त्याग करें और अच्छाइयों को अपनाएं तथा आर्य पूर्वजों के आर्य पथ पर आरूढ़ होकर अपने गली, मोहल्ले, नगर, ग्राम का आर्यकरण अर्थात शुद्धिकरण करें और इसी से भाईचारा एवं एकता उत्पन्न होगी। आर्य महासंघ के महासचिव ने आर्य महासंघ के बारे में परिचय देते हुए बताया कि यह महासंघ राम, कृष्ण, भगत सिंह का निर्माण करता है, उनका संवर्धन एवं संरक्षण करता है और इस काम में जनता को बढ़-चढ़कर आर्य महासंघ का साथ देना चाहिए।

आर्य उपेंद्र भजनोपदेशक ने श्रोताओं को अपनी मधुर वाणी से मंत्रमुग्ध कर दिया। डॉक्टर चांद कौर आर्या ने भी अपने भजन सुनाए। इस अवसर पर डॉ. रमेश बाबा आर्य, जसवीर सिंह, आचार्य अशोक पाल, आचार्य कुलबीर वैदिक, हरि कृष्ण कक्कड़, डॉ. वीरेंद्र अलंकार, नरेंद्र आहूजा विवेक, अंजू आहूजा, योगेंद्र क्वात्रा, ईशम चंद, शिवनारायण, सोमदत्त शास्त्री चंडीगढ़, पंचकूला के लोग उपस्थित थे।

आर्य महासंघ द्वारा चण्डीगढ़ में आर्य संगठन संकल्प सभा का आयोजन

विगत 2 अक्टूबर को आर्य महासंघ के द्वारा आर्य समाज भवन, सैक्टर-16 डी, चण्डीगढ़ में आर्य समाज संगठन संकल्प सभा का आयोजन किया गया। इसमें चण्ड़ीगढ़ पंचकूला के लगभग दो सौ आर्यों-आर्योंओ ने भाग लिया। इस कार्यक्रम को आर्यों का संगठन कर उन्हें आगे बढाने के उद्देश्य से किया गया। आर्यों के संगठित हुए बिना आर्यों का वर्चस्व स्थापित नहीं हो सकता। इस अवसर पर आर्य महासंघ के महासचिव आचार्य सतीश जी ने आर्य महासंघ के महत्त्व पर प्रकाश डाला व सभी आर्यों, आर्य संस्थानों, विद्वानों व आर्य संगठनों को आर्य महासंघ के साथ चलने का आह्वान् किया। मुख्य वक्ता के रूप में आर्य महासंघ के अध्यक्ष आचार्य हनुमत् प्रसाद जी ने अपने उद्बोधन मे आर्य संगठन पर बल दिया। आर्यों का संगठित होना आवश्यक है। संगठन से ही विचार धारा व्यापक होती है। अब तक हम बिखरें रहे हैं। आर्यों के नेतृत्व में एकता नहीं रही। आर्यों की विचार धारा स्थापित हो इसके लिए सभी का एक साथ मिलकर चलना अनिवार्य है। लगभग सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधि इस संगठन में सम्मिलित रहे। कार्यक्रम के व्यवस्थापक आचार्य डा. रमेश बावा, उपाध्यक्ष, आर्य महासंघ रहे। कार्यक्रम संचालन आर्य महासंघ के प्रवक्ता आचार्य अशोकपाल ने किया।

-आचार्य कुलबीर, सचिव, राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा, हरियाणा प्रदेश।

गृहस्थ संबंध : भाग–४

–आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर,

कोई ब्रह्मचर्य से गृहस्थ में जाता है तो एक स्वप्न बुनकर ही जाता है। स्वप्न उसके भावी जीवन का, सुख का, सन्तती का, गृहस्थ के साफल्य का। यदि समृद्ध न रह पाये तो सुखी नहीं रह सकेंगे, सन्तती न प्राप्त हो सकी तब भी दुःख, सन्तान प्राप्त हो और अल्पजीवी रहे तो महादुःख, यदि वो प्रजा न बन पाये तो गृहस्थ का साफल्य ही नहीं। उपरोक्त साफल्य प्राप्त्यर्थ नियमबद्ध जीवन जीना होगा, उत्तरदायित्व स्वीकारने होंगे। ये उत्तरदायित्व न समझने, न स्वीकारने के कारण गृहस्थ दुःख का उत्पादक होकर नरक ही बन जाता है। इसी लिए ऋषियों ने व्यवस्था दी विवाह संस्कार की और उसका प्रत्येक चरण जीवन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण सन्देश लिए हुवे है। इन्हीं उत्तरदायित्वों को समझने के लिए है पाणिग्रहण। इस क्रिया में वर वधू के दायें हाथ को पकडकर सबके सामने अपने कर्तव्यों की घोषणा करता है, वधू तो पहले ही अनुगमन की घोषणा कर चुकी है अतः वह भी वर के साथ–साथ कर्तव्यों को स्वीकारती है। कितना सुन्दर दृश्य है, कितना सुन्दर भाव है? वर्तमान समाज के सामने वधू–वर भावी जीवन की नींव रख रहे हैं और वह भी सनातन सिद्धान्तों के ठोस आधार पर। विदेशी और उनके अनुगंता मनवाधिकारवादी पति–पत्नी को तोल–तोल कर देखते हैं, कौन हल्का है? कौन भारी है? कौन हानि में है? कौन लाभ ले रहा है? कौन बडा है? कौन छोटा है? वह नहीं जानते कि आर्य सम्बन्धों में माप–तोल पर नहीं समर्पण पर विश्वास करते हैं, एकबार जब किसी के प्रति हम समर्पित हो जाते हैं तब हल्का–भारी, हानि–लाभ, बडा–छोटा, जय–पराजय, मान–अपमान का प्रश्न रह ही नहीं जाता। इस वार्ता का उद्देश्य यह बताना है कि– बिना समर्पण के कर्तव्य पालन औपचारिकता मात्र ही है। अतः वधू–वर औपचारिकता नहीं अपितु समर्पित होकर कर्तव्य पालन करें।

संक्षेप से उन कर्तव्यों की चर्चा करते हैं। वृद्धावस्था पर्यन्त सुखपूर्वक एक–दूसरे के अनुकूल रहना, छोटे से वाक्य में यह बात कह अवश्य दी है किन्तु है बहुत महत्वपूर्ण व सारयुक्त। यह एक दो दिन में पूर्ण होने वाला काम नहीं है जिसे कोई औपचारिकता समझ कर कर दे इसीलिए ऋषि दयानन्द एक ऐसे भाव को आवश्यक मानते हैं जिससे वधू–वर दोनो स्वीकारें कि आज से मैं आपके हाथ और आप मेरे हाथ बिक चुके हैं, कभी एक–दूसरे का अप्रियाचरण न करेंगे। इसी भाव में जीवन जीकर दम्पत्ती परस्पर सुख के वाहक बनते हैं। यहीं सुख प्राप्ति के कई और आयाम भी हैं जिनमें सुख का मूल धर्म है,धर्म की मर्यादाओं के बाहर दुःख है, विषाद है, सुख तो मर्यादा के भीतर ही है। पत्नी–पति एक दूसरे को मर्यादा में बांधकर रखते हैं, क्योंकि मर्यादा की रेखा को लांघना पतन है, दोनों को एक दूसरे की पतन से रक्षा करनी है यह पत्नी–पति का धर्म है। कई मूर्ख लोग कहते हैं कि पति शब्द ही पुरुषवादी मानसिकता का परिचायक है, उनका तर्क होता है कि पति शब्द का अर्थ है स्वामी, वे यह नहीं बताते कि पत्नी शब्द का अर्थ भी स्वामिनी है दानों एकदूसरे के अधिकारी हैं यही तो प्रेम है। दोनो को मिल के गृहस्थ के सब कामों की सिद्धि करनी है। कोई भी पत्नी, पति में और पति, पत्नी में दूसरे का साझा नहीं चाहते हैं अर्थात सपतित्व और सपत्नीत्व किसी भी स्थिति में अस्वीकार्य है। ऋषि दयानन्द के शब्द अत्यन्त ग्राह्य हैं– "परमेश्वर की कृपा से आप मुझे प्राप्त हुए हो। मेरे लिए आपके बिना इस जगत में दूसरा पति अर्थात् स्वामी पालन करनेहारा सेव्य इष्टदेव कोई नहीं है। न मैं आपसे अन्य दूसरे किसी को मानूंगी। जैसे आप मेरे सिवाय दूसरी किसी स्त्री से प्रीति न करोगे, वैसे मैं भी किसी दूसरे पुरुष के साथ प्रीति भाव से न वर्ता करुंगी।" पतिव्रत और पत्नीव्रत का पालन दोनो ओर से होना ही चाहिए। आधुनिक विचारकों या कहना चाहिए कुविचारकों ने पत्नी–पति को आमने–सामने खडे करके घर को युद्ध का मैदान बना दिया है, दोनो अपने–अपने सहयोगियों सहित एक दूसरे पर कीचड उछाल रहे हैं। सिर फुटव्वल मची है, स्वर्ग को नरक बनाया जा रहा है। ऋषियों के प्रेम और सनातन नियमों की ठंडी छांव में रहते तो ऐसा नहीं हो रहा होता। ऋषियों की प्रेरणा में चलने वाले गृहस्थ एक–दूसरे को शोभा से आच्छादित किया करते हैं, पति कहता है मेरी पत्नी सूर्य की किरणों के समान वस्त्र और आभूषणों से ढकी रहे। पत्नी कहती है, मैं तो स्वयं आपको सूर्य के समान अलंकृत रखना चाहती हूँ। यह व्यवहार यदि सारे गृहस्थ करें तो विवाह के प्रति नकार का भाव उत्पन्न ही न हो, परिवार स्वर्ग का सोपान बन जाए। इसीलिए ऋषि कहते हैं कि दोनो को दृढ प्रतिज्ञ होना चाहिए –हम एक–दूसरे को सदा आनन्द, ऐश्वर्य और प्रजा से बढाया करेंगे जिससे गृहस्थ का अभ्युदय बढे। यह विवाह नामक संस्था इस कारण से भी लोकापवाद अर्थात बदनामी को प्राप्त होती है क्योंकि वधू–वर अपने आप को अलग–अलग ही मानते रहते हैं जबकि विवाह का साफल्य तो मिलकर दाम्पत्य निभाने में है। इसी कारण से ऋषियों ने वैदिक व्यवहार की प्रतिज्ञा कराई कि– हम मन में भी एक दूसरे से चोरी नहीं रखेंगे। तात्पर्य यह है कि हमारे बीच इतना स्थान नहीं होगा जिसमें शक या शंका जैसा कोई भाव उत्पन्न हो सके। वधू–वर कहते हैं कि हम किसी उत्तम पदार्थ का भोग भी चोरी से नहीं करेंगे। जब उत्तम पदार्थ का ही चोरी से भोग नहीं करेंगे पुनः मद्य मांसादि निकृष्ट पदार्थों की तो बात ही क्या? यदि दोनों में से कोई इन बातों के पालन करने के लिए अपने भीतर समर्पण नहीं पाता तो उसे विवाह नहीं करना चाहिए।

संसार भर में विवाह संस्था इसी रुप में प्रचलित है जिसमें वधू विवाह करके वर के घर आती है। उसे अपने माता–पिता, भाई–बहन, दादा–दादी, भाभी सहेली आदि परिजनों एवं उस समस्त वातावरण जिसमें उसका लालन पालन हुआ था, को छोडकर नये परिजन, नये वातावरण और नये सम्बन्धों को अपनाना पडता है। उसे अधिक भावनात्मक दृढता की आवश्यकता है, बिना इसके अनेकों महिलाएं टूट जाति हैं,इनमें से कई तो आत्महत्या जैसी कायरता करने से भी नहीं चूकती हैं। ऋषियों ने इस समस्या का समाधान करने के लिए मन्त्र के साथ एक क्रियात्मक उदाहरण विवाह विधि में जोड दिया है। प्रक्रिया को इस प्रकार रखा गया है– वधू की माता अथवा भाई दहिने हाथ से वधू का दक्षिण पग उठवाके पत्थर की शिला पर चढवावे और वर उसी समय मन्त्र बोले–

ओ३म् आरोहेममश्मानमश्मेव त्वं स्थिरा भव।
अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाध्स्व पृतनायतः।।

अर्थात् हे वधू! इस सम्मुख रखी शिला पर चढ और इस पत्थर की भांती स्थिर होने की शिक्षा इससे ग्रहण कर। ऐसी बनकर रहना कि जीवन में आनेवाली बाधाओं को इसी प्रकार पैरों के नीचे दबाकर रखना जैसे इस शिला को दबा रखा है। स्त्रि भले ही कोमलांगी है उसे मानसिक रुप से दृढ रहना ही होगा। उसकी दृढता ही गृहस्थ की उत्तमता को सुनिश्चित करेगी। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पडा है जब आर्यो की स्त्रियों ने बुद्धिमत्ता पूर्वक बडे से बडे बलिदान देकर भी विभिन्न प्रकार से गृहस्थ की, समाज की और राष्ट्र की रक्षा की है। अज्ञानता और गुलामी के काल में वेद विद्या व वैदिक परम्पराओं के छूटने से हम मानसिक रुप से कमजोर हुए।

संध्या काल

आश्विन– मास, शरद–ऋतु, कलि–5120, वि. 2076
(15 सितम्बर 2019 से 13 अक्टूबर 2019)
प्रातः कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)

कार्तिक– मास, वर्षा ऋतु, कलि–5120, वि. 2076
(14 अक्टूबर 2019 से 12 नवम्बर 2019)
प्रातः कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 P.M.)

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

[झूठे ग्राहक और झूठे बजाज का दृष्टान्त]

दृष्टान्त- एक किसी अधर्मी मनुष्य ने किसी अधर्मी बजाज की दुकान पर जाकर कहा कि- ''यह वस्त्र कितने आने गज देगा?'' वह बोला कि सोलह आने, तुम भी कुछ कहो।'' बजाज और ग्राहक दोनों जानते ही थे कि यह दस आने गज का कपड़ा है, परन्तु अधर्मी झूठ बोलने में कभी नहीं डरते।

ग्राहक- छह आने गज दो और सच-सच लेने-देने की बात करो। **बजाज**-अच्छा तो तुमको दो, आने छोड़ देते हैं, चौदह आने दो। **ग्राहक**-है तो टोटा परन्तु सात आने ले लो। **बजाज**-अच्छा तो सच-सच कहूँ? **ग्राहक**-हाँ, **बजाज**-चलो एक आना टोटा ही सही, तेरह आने दो। तुमको लेना हो तो लो। **ग्राहक**-मैं सत्य-सत्य कहता हूँ कि इसका आठ आने से अधिक कोई भी तुमको न देगा। **बजाज**-"तुमको लेना हो तो लो, न लेना हो तो मत लो। परमेश्वर की सौगन्ध बारह आने गज तो मुझको पड़ा है, तुमको भला मनुष्य जानकर मैं दे देता हूँ। **ग्राहक**-धर्म की सौगन्ध, मैं सच कहता हूँ तुझको देना हो तो दो, पीछे पछतावेगा। मैं तो दूसरे की दुकान से ले लूँगा। क्या तुम्हारी एक ही दुकान है? नौ आने गज दे दो, नहीं तो मैं जाता हूँ। **बजाज**-तुमने कभी ऐसा कपड़ा खरीदा भी है? नौ आने गज लाओ मैं सौ रुपये का लेता हूँ।

ग्राहक धीरे-धीरे चला कि मुझको बुलाता है वा नहीं। बजाज तिरछी नजरो से देखता रहा कि देखें यह लौटता है, वा नहीं। जब वह न लौटा तब बोला-सुनो इधर आओ। **ग्राहक**-क्या कहते हो नव आने पर दोगे? **बजाज**-ए लो धर्म से कहता हूँ कि ग्यारह आने भी दे दो। **ग्राहक**-साढ़े नव आने लो। कहकर कुछ आगे चला। बजाज ने समझा कि हाथ से गया। अजी इधर आओ-आओ। **ग्राहक**-क्यों तुम देर लगाते हो ? व्यर्थ काल जाता है। **बजाज**-मेरे बेटे की सौगन्द। तुम इसको न लोगे तो पछताओगे? अब मैं सत्य ही कहता हूँ कि साढ़े दश आने दे दो नहीं तो तुम्हारी राजी।

ग्राहक-मेरी सौगन्द। तुमने दो आने अधिक लिये हैं। अच्छा दश आने देता हूँ, इतने का है तो नहीं। **बजाज**-अच्छा सवा दश आने भी दोगे? **ग्राहक**-नहीं-नहीं। **बजाज**-अच्छा, आओ बैठो कितने गज लोगे? **ग्राहक**-सवा गज। **बजाज**-अजी कुछ अधिक लो। **ग्राहक**-"अच्छा, नमूना ले जाते हैं। अब तुम्हारी दुकान देख ली। फिर कभी आवेंगे तो बहुत लेंगे। बजाज ने नापने में कुछ सरकाया। **ग्राहक**-अजी देखें तो, तुमने कैसा नापा? **बजाज**-क्या विश्वास नहीं करते हो? हम साहूकार हैं वा ठट्ठा है? हम कभी झूठ कहते और करते हैं? **ग्राहक**-हाँ जी, तुम बड़े सच्चे हो। एक रुपया कहकर दश आने तक आये, छः आना घट गये, अनेक सौगन्द खाईं। **बजाज**-वाह जी वाह! तुम बड़े सच्चे हो? छह आने कहकर दश आने तक लेने को तैयार हो। अनेक सौगन्द खा-खाकर आये। सौदा झूठ के विना कभी नहीं हो सकता।

ग्राहक-तू बड़ा झूठा है। **बजाज**-क्या तू नहीं है? क्योंकि एक गज कपड़े के लिये कोई भी भला मनुष्य इतना झगड़ा करता है? **ग्राहक**-तू झूठा तेरा बाप। हमारी सात पीढ़ी में कोई झूठा भी हुआ है? **बजाज**-तू झूठा, तेरा सात पीढ़ी भी झूठी। ग्राहक ने ले जूता एक मार दिया, बजाज ने चट गज मारा। अड़ोसी-पड़ोसी दुकानदारों ने जैसे-तैसे छुड़ाया। **बजाज**-चल-चल, जा तेरे जैसे लाखों देखे हैं। **ग्राहक**-चलबे तेरे जैसे जुवा चोर, टटपूंजिये दुकानदार मैंने करोड़ों देखे हैं। **अड़ोसी-पड़ोसी**-अजी झूठ के बिना कभी सौदा भी होता है? जा ओजी तुम अपनी दुकान पर बैठो और जाओ जी, तुम अपने घर को। **बजाज**-यह बड़ा दुष्ट मनुष्य है। **ग्राहक**-अबे मुख सम्हाल के बोल। **बजाज**-तू क्या कर लेगा? **ग्राहक**-जो मैंने किया सो तैने देख लिया और कुछ देखना हो तो दिखला दूँ। **बजाज**-क्या तू गज से न पीटा जायेगा? फिर दोनों लड़ने को दौड़े। जैसे-तैसे लोगों ने अलग-अलग कर दिये। ऐसे ही सर्वत्र झूठे लोगों की दुर्दशा होती है।

धार्मिकों का दृष्टान्त-

ग्राहक-इस दुशाले का क्या मूल्य है। **बजाज**-पाँच सौ रुपये।

ग्राहक-अच्छा लीजिए। **बजाज**-"लो दुशाला।"

[सच्चे बजाज और झूठे ग्राहक का दृष्टान्त]

सच्चे दुकानेवाले के पास कोई झूठा ग्राहक गया, [और पूछां-] इस दुशाले का क्या लोगे? **बजाज**-अढ़ाई सौ रुपये। **ग्राहक**-दो सौ लो। **सेठ**-जाओ, यहाँ तुम्हारे लिए सौदा नहीं है। **ग्राहक**-अजी! कुछ तो कम लो। **साहूकार**-यहाँ झूठ का व्यवहार नहीं है, बहुत मत बोले। लेना हो तो लो, नहीं चले जाओ। ग्राहक दूसरी बहुत दुकानों में माल देख मूल्य करके, फिर वहीं आके अढ़ाई सौ रुपये देकर दुशाला ले गया।

[सच्चे ग्राहक और झूठे बजाज का दृष्टान्त]

सच्चा ग्राहक झूठे दुकानदार के पास जाकर बोला कि-'इस पीताम्बर का क्या लोगे'? **बजाज**-पच्चीस रुपये। **ग्राहक**-बारह रुपये का है देना हो तो दो, कहकर चलने लगा। **बजाज**-अजी अठारह दो। **ग्राहक**-नहीं। **बजाज**-अच्छा तो साढ़े बारह ही दो। **ग्राहक**-नहीं। **बजाज**-अच्छा, बारह का ही-ले जाओ। **ग्राहक**-लाओ, लो रुपये।

ऐसे धार्मिकों को सदा लाभ होता है। और झूठों की दुर्दशा होकर दिवाले ही निकल जाते हैं। इसलिए सब मनुष्यों को अत्यन्त उचित है कि झूठ को सर्वथा छोड़ को सत्य ही से सब व्यवहार करें। जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होकर सदा आनन्द में रहें।

(प्र०) मनुष्य का आत्मा सदा धर्म-अधर्मयुक्त किस-किस कर्म से होता है ?

(उ०) जब तक मनुष्य सर्वान्तर्यामी, सर्वद्रष्टा, सर्वव्यापक, सर्वकर्मों के साक्षी परमात्मा से नहीं डरते, अर्थात् कोई कर्म ऐसा नहीं है जिस को वह न जानता हो। सत्यविद्या, सुशिक्षा, सत्पुरुषों का संग, उद्योग, जितेन्द्रियता, ब्रह्मचर्य आदि शुभ गुणों के होने और लाभ के अनुसार व्यय करने से धर्मात्मा होता है और जो इससे विपरीत है वह धर्मात्मा कभी नहीं हो सकता।

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट–

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक www.aryanirmatrisabha.com/हिन्दी में पत्रिका पर जाएं।

15 सितम्बर–13 अक्टूबर 2019 **आश्विन** ऋतु- शरद

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
शुक्ल विजय दिवस आश्विन शुक्ल दशमी 8 अक्टूबर						उत्तराभाद्रपदा कृष्ण प्रतिपदा 15 सितम्बर
रेवती कृष्ण द्वितीया 16 सितम्बर	अश्विनी कृष्ण तृतीया 17 सितम्बर	अश्विनी कृष्ण चतुर्थी 18 सितम्बर	भरणी कृष्ण पंचमी 19 सितम्बर	कृतिका कृष्ण षष्ठी 20 सितम्बर	रोहिणी कृष्ण सप्तमी 21 सितम्बर	मृगशिरा कृष्ण अष्टमी 22 सितम्बर
आर्द्रा शुक्ल नवमी 23 सितम्बर	पुनर्वसु शुक्ल दशमी 24 सितम्बर	पुष्य शुक्ल एकादशी 25 सितम्बर	आश्लेषा शुक्ल द्वादशी 26 सितम्बर	मघा शुक्ल त्रयोदशी/ चतुर्दशी 27 सितम्बर	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण अमावस्या 28 सितम्बर	हस्त शुक्ल प्रतिपदा 29 सितम्बर
चित्रा शुक्ल द्वितीया 30 सितम्बर	स्वाती शुक्ल तृतीया 1 अक्टूबर	विशाखा शुक्ल चतुर्थी 2 अक्टूबर	अनुराधा शुक्ल पंचमी 3 अक्टूबर	ज्येष्ठा शुक्ल षष्ठी 4 अक्टूबर	मूल शुक्ल सप्तमी 5 अक्टूबर	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल अष्टमी 6 अक्टूबर
उत्तराषाढ़ा शुक्ल नवमी 7 अक्टूबर	श्रवण शुक्ल दशमी 8 अक्टूबर	धनिष्ठा शुक्ल एकादशी 9 अक्टूबर	शतभिषा शुक्ल द्वादशी 10 अक्टूबर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल त्रयोदशी 11 अक्टूबर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल चतुर्दशी 12 अक्टूबर	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल पूर्णिमा 13 अक्टूबर

14 अक्टूबर–12 नवम्बर 2019 **कार्तिक** ऋतु- हेमन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
रेवती कृष्ण प्रतिपदा 14 अक्टूबर	अश्विनी कृष्ण द्वितीया 15 अक्टूबर	भरणी कृष्ण तृतीया 16 अक्टूबर	कृतिका कृष्ण तृतीया 17 अक्टूबर	रोहिणी कृष्ण चतुर्थी 18 अक्टूबर	मृगशिरा कृष्ण पंचमी 19 अक्टूबर	आर्द्रा कृष्ण षष्ठी 20 अक्टूबर
पुनर्वसु कृष्ण सप्तमी/ अष्टमी 21 अक्टूबर	पुष्य कृष्ण नवमी 22 अक्टूबर	आश्लेषा कृष्ण दशमी 23 अक्टूबर	मघा कृष्ण एकादशी 24 अक्टूबर	पू॰ फाल्गुनी कृष्ण द्वादशी 25 अक्टूबर	उ॰ फाल्गुनी/हस्त कृष्ण त्रयोदशी 26 अक्टूबर	चित्रा कृष्ण चतुर्दशी 27 अक्टूबर
स्वाती कृष्ण अमावस्या/ प्रतिपदा 28 अक्टूबर	विशाखा शुक्ल द्वितीया 29 अक्टूबर	अनुराधा शुक्ल तृतीया 30 अक्टूबर	ज्येष्ठा शुक्ल चतुर्थी 31 अक्टूबर	मूल शुक्ल पंचमी 1 नवम्बर	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल षष्ठी 2 नवम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल सप्तमी 3 नवम्बर
श्रवण शुक्ल अष्टमी 4 नवम्बर	धनिष्ठा शुक्ल नवमी 5 नवम्बर	शतभिषा शुक्ल नवमी 6 नवम्बर	शतभिषा शुक्ल दशमी 7 नवम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल एकादशी 8 नवम्बर	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल द्वादशी 9 नवम्बर	रेवती शुक्ल त्रयोदशी 10 नवम्बर
अश्विनी चतुर्दशी 11 नवम्बर	भरणी शुक्ल पूर्णिमा 12 नवम्बर			दीपावली पर्व व ऋषि बलिदान दिवस 27 अक्टूबर		

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

The Maharana came to Swamiji many a time, and his faith in the truth of his doctrines grew day by day. He expressed his views to this effect one day: "Remember, ye chiefs, what people used to say about the true and patriotic Mahatma, and what baseless charges in their ignorance they laid at his door, If we had come to harbor about him, would never have been removed, indeed more evil ideas regarding him would have taken root in our minds. What reliance in future can be placed on the words of the mischievous individuals who malign people in the words of the mischievous individuals, who, to serve their selfish ends, deceive their fellow men?"Leaving Chitttaur Swamiji arrived at Indore, late in December, 1881. He could not stay long there, as it became necessary for him to leave for Bombay. A break in this sojourn of his in Rajputana was necessitated by circumstances and this lasted for about six months. Col. Alcott of America and Madame Blavatsky of Russia the founders of Theosophical Society (Society of Seekers after God), were great admirers of Swamiji, so much so that they had chosen to change the title of their society to 'the Theosophical Society of the Arya Samaj or Aryavarta'. They carried on correspondence with Swamiji for some years, but since they knew nothing of Hindi and Sanskrit, and Swamiji little of English, the entire correspondence had to be carried on through Mr. Harish Chandra Chintamani of Bombay. Whether this Harish Chandra purposely kept from Swamiji some fundamental differences of creed between Arya Samaj and Theosophical society because he considered the association of Westerners a great asset to the Arya Samaj, or he hoped that these differences would vanish in course of time, is not quite certain, but Swamiji came to feel that connection, however valuable, could not continue, as the Theosophists did not believe in some of the fundamental tenets of the Arya Samaj. It was this that had necessitated his departure to Bombay where he ultimately announced the formal dissociation of the Arya Samaj from the activities of the the Theosophists.

Swamiji left Bombay towards the end of june, 1882, and passing through indore and Rutlam, reached Chittaurgarh, the symbol of chivalry and martyrdom in Indian History.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

यह सत्र मेरे लिय महत्वपूर्ण अनुभव था। औंर मेरे कई प्रश्नों के उत्तर दे गया। इससे मेरा जीवन जीने का अनुभव अच्छा होगा। मुझे वेदों के बारे में जानकर अतिप्रसन्नता हुई। और अधिक प्रसन्नता इस बात से हुई की हमारी संस्कृति दुनियां में सबसे प्रबल अच्छी और सबसे गौरवमय है।

मैं आर्य समाज को और अधिक विस्तृत करने में अपना योगदान दूगां। मैं आर्यावर्त के लिय दिन रात कार्य करूँगा।

नाम : अभिषेक आर्य, आयु : 24 वर्ष, योग्यता : बी.ए., कार्यः विद्यार्थी, पता : खहरी, बिलासपुर।

यहाँ पर जब मैं आया तो भारत देश के बारे में इतना नहीं जानता था भारत देश में फैली भ्रंतियों का शिकार था। सत्र जैसे-जैसे आगे बढ़ा मैंने अपने नकारात्मक विचारों का त्याग किया इस सत्र से मुझे एक नया जीवन जीने का मौका मिला। मैं आर्य समाज की विचार धारा से प्रेरित होकर सभी बुराईयों का त्याग कर रहा हूँ। मैं एक काल्पिनक जीवन से निकलकर नये जीवन की शुरूआत कर रहा हूँ। और ये सब इस सत्र में भाग लेने से हुआ है। मैं आर्य निदान जी का कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ। जय आर्य, जय आर्यावर्त।

नाम : कुशल नरवाल, आयु : 34 वर्ष, योग्यता : स्नातक, कार्यः सरकारी नौकरी, पता : रोहतक, हरियाणा।

अत्यन्त सुखद अनुभव प्राप्त हुआ दो दिवसीय सत्र मैंने सीखा की ईश्वर क्या है? ईश्वर की उपासना विधि क्या है? राष्ट्र क्या है? आदि आदि रूचिकर विषयों के बारे ज्ञान प्राप्त हुआ, कुछ पूर्व में प्रचलित मान्यताओं को त्यागने में सहायता मिली

आर्य निर्मात्री सभा सदस्य के रूप में जो भी उचित कार्य जिसके योग्य मुझे समझा जाए मैं तत्पर रहूँगा जैसे की आर्य समाज प्रचार-प्रसार इत्यादि।

नाम : रणदीप कुमार, आयु : 37 वर्ष, योग्यता : परास्नातक, कार्यः सी.ए.सी., पता : करनाल, हरियाणा।

यह शिविर मेरे जीवन में एक अतुल्य स्थान रखता है। आर्य समाज की विचारधारा ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। इस शिविर से मुझे अपने अमुल्य इतिहास भुगोल की विस्तृत जानकारी मिली। तथा जो भी सूचना व परामर्श इस शिविर में मिले वे यथार्थ सत्य व प्रमाणित भी हैं। इससे जुड़ना मेरे लिये सौभाग्य की बात है। आचार्य जी ने मुझे प्रभावित किया।

नाम : प्रदीप कुमार आर्य, आयु : 34 वर्ष, योग्यता : एम.सी.ए., कार्यः कृषि, पता : कबाली, कुरुक्षेत्र।

इस राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा से जुड़कर वास्तव में मैंने अपने अस्तित्व के बारे में, अपने राष्ट्र के बारे में, अपने पूर्वज महापुरुषों के बारे में, उस सर्वज्ञ, न्यायकारी पिता परमेश्वर परमात्मा की सर्वव्यापकता के बारे में जाना। अपने इस राष्ट्र में सोये हुए बन्धुओं को भी जगाने का संकल्प लिया व सबसे बड़ी बात, मिशन आर्यावर्त में अपना यथासम्भव योगदान देने हेतु प्रेरित हुआ हूँ।

मैं यथाशक्ति इस आर्य/आर्या निर्माण में आर्थिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मि, राजनैतिक रूप से अपना योगदान देने का भरसक प्रयास करूँगां।

नाम : राहुल, आयु : 17 वर्ष, योग्यता : 11वीं, कार्यः छात्र, पता : जीन्द, हरियाणा।

हम पहले से ही आर्य धर्म को मानते हैं, इस सत्र के दौरान हमे आचार्य द्वारा पता चला कि हमारी संस्कृति को और भी छीन्न-भिन्न करके इस्लाम धर्म में परिवर्तन किया जा सकता है, हिन्दुओं ने अपने लक्ष्य की ओर ध्यान नहीं दिया, हमें हिन्दू को आर्य बनाना है उन्हीं को आर्यों की विशेषताओं के द्वारा आर्य बनाना है। हमें एक बनने को आचार्य जी ने निर्देश दिया है उसी से ही हमारा, राष्ट्र, देश, नारी सम्मान मिल सकता है। आगे भी ऐसी कक्षाएँ लगनी चाहिए। हम उन में अपना पूरा सहयोग देंगे। हमें अपने देश को फिर आर्यावर्त बनाना है।

हम सभी महिलाएँ प्रचार द्वारा तन, मन और धन से सहयोग करने के लिए तैयार है, और करंगे।

नाम : भगवती देवी, आयु : 56 वर्ष, योग्यता : बी.ए., कार्यः गृहस्थी, पता : अहमदाबाद, गुजरात।

यहाँ आने से पहले मैं भगवान/ईश्वर को मानु या नहीं मानु? इस दुविधा में थी। लेकिन ये दो दिन के सत्र में मेरी दुविधा का हल मिल गया और सही क्या है? उसका ज्ञान भी हो गया। पहले लोगों की करनी और कथनी के मतभेद से मैं मानती थी कि मैं भगवान को नहीं मानती लेकिन यहाँ से मुझे सीखने को मिला कि सच्चा धर्म वेद है और जो लोग कथनी और करनी मैं फर्क रखते हैं वो गलत है।

मुझे यहाँ से बहुत कुछ अच्छा और सच्चा जानने को मिला। और मैं अब से कट्टर आर्या बनके रहूँगी। ये लघु सत्र बहुत ही अच्छा कार्य कर रह है। इसका और भी प्रचार करना चाहिए।

मैं इस महान कार्य को आगे प्रचार करना चाहूँगी। मेरे दोस्त-सगे-संबधिक को भी वेदों का प्रचार और उनको आर्य बनाने का प्रयास करूँगी।

नाम : श्रद्धा प्रजापति, आयु : 26 वर्ष, योग्यता : बी.एड., कार्यः गृहणी, पता : अहमदाबाद, गुजरात।

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	13 अक्टूबर	दिन-रविवार	मास-आश्विन	ऋतु-शरद	नक्षत्र-उ0भाद्रपदा
अमावस्या	28 अक्टूबर	दिन-सोमवार	मास-कार्तिक	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-स्वाती
पूर्णिमा	12 नवम्बर	दिन-मंगलवार	मास-कार्तिक	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-भरणी
अमावस्या	26 नवम्बर	दिन-मंगलवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-विशाखा

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्रि सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।